



ज्ञानविधि

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-4.5

Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026

Page No.- 280-282

DOI :-10.71037/gyanvidha.v3i2.41

©2026 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

Author's :

1. सुनीति त्यागी

शोधार्थी, आई. आई. एम. टी विश्वविद्यालय,
मेरठ.

2. डॉ. पूनम शर्मा

निर्देशिका, आई. आई. एम. टी विश्वविद्यालय,
मेरठ.

Corresponding Author :

सुनीति त्यागी

शोधार्थी, आई. आई. एम. टी विश्वविद्यालय,
मेरठ.

वैदिक साहित्य में पर्यावरणीय संरक्षण विषयक चेतना

शोध सार : पर्यावरण जीवन जगत का आधार अर्थात् जीवनयापन का स्रोत है जो पृथ्वी पर अनादिकाल से मानव, जीव-जन्तु और वनस्पति को आधार प्रदान कर रहा है। प्राचीन समय में पर्यावरण अध्ययन का गौण पक्ष रहा है। प्रकृति से उनका सामंजस्य था तथा उस समय प्राकृतिक संसाधनों का सन्तुलित चक्र बना हुआ था परन्तु आज भौतिकतावादिता की अंधी दौड़ ने और औद्योगिककरण ने मानव को स्वार्थी बना दिया है।

हमारे संतो की दृष्टि में पर्यावरण और शांति का चरित्र 'वैश्विक' था। और इसलिए उनके मुख से माता भूमि: पुत्रोहं पृथिव्या' का गान फूट पड़ा था। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य त्रुतिकी श्रेणी में आता है। रामायण भगवद्गीता, समेत महाभारत तथा उपनिषद जैसी रचनाएँ स्मृति परंपरा के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं।

वैदिक ग्रंथों में पर्यावरण के वृहद स्वरूप, उसके संरक्षण तथा चैतन्यता पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। इसमें पर्यावरण को प्रचलित संकल्पना के स्थान पर इसके सम्पूर्ण सचेतन एवं विशद स्वरूप का वर्णन है। तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों की जिम्मेदारी भी तय की गई है। पर्यावरण का संतुलन पृथ्वी के अस्तित्व व जीवन से सीधा जुड़ा हुआ है।

मुख्य बीज : परिदृश्य, प्रतिपादित, संवेदनशील, अनुकूलतम, संरक्षण वैश्विक, औद्योगिककरण, चैतन्यता, साम्यावस्था।

प्रस्तावना : वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु "विद ज्ञाने" से घञ् "अ" प्रत्यय करने पर बनता है। इसका आशय है ज्ञान। अतः वेद शब्द का अर्थ होता है—ज्ञान का संग्रह—ग्रंथ। प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अपनी आर्ष दृष्टि से प्राप्त किया था, उसका संग्रह वेदों में है।

पर्यावरण शब्द परि+आवरण से बना है। इसका अर्थ है— हमारे चारों तरफ का वातावरण जिससे हम ढके हुए हैं। पर्यावरण मानव को चारों ओर से घेरे हुए होता है। तथा पर्यावरण मनुष्य के जीवन और क्रियाओं पर भी प्रभाव डालता है। इसमें दिशाएँ सम्मिलित हैं, जो मानव के जीवन को प्रभावित करता है। एच. फिटिंग के अनुसार "thokas की परिस्थितिकि

(Ecological) कारकों का योग पर्यावरण है।"

वैदिक सभ्यता पर्यावरण के प्रति संवेदनशील थी। इस सभ्यता ने पर्यावरण की उपस्थिति और गुणवत्ता को हमेशा महत्व दिया। वैदिक सभ्यता प्रकृति और पर्यावरण के प्रति सजग थी। जानवरों, पक्षियों, पेड़ों और भौगोलिक संस्थानों को देवी देवीताओं का दर्जा दिया जाता था। और इन सबकी पूजा के साथ साथ इनके संरक्षण का भी ध्यान रखते थे। पीपल का पेड़ अधिक आक्सीजन छोड़ता है। वैदिक परंपरा में इसे पवित्र घोषित किया गया साथ ही इसका अस्तित्व सुनिश्चित करके पर्यावरण संरक्षण प्रदान किया गया।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को वैदिक काल से ही अत्यधिक महत्व दिया गया है। वेदों में कहा गया है कि मनुष्य शरीर पृथ्वी, जल, अंतरिक्ष अग्नि और वायु जैसे पंच तत्वों से निर्मित है यदि इनमें एक भी तत्व दूषित है तो इसका प्रभाव मानव जीवन पर अवश्य पड़ेगा। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों ने प्रकृति को देवी-देवताओं का स्थान दिया है। सूर्य, चंद्रमा अग्नि, व नदियों को देवी देवताओं के रूप में पूजा जाता था। पेड़ों जैसे पीपल वट वृक्ष व केला को आज भी पूजा जाता है।

भारतीय ऋषियों ने 'वसुदेव कुटुम्बकम्' के रूप में इस विश्व को एक पारिभाषिक इकाई के रूप में देखा है। हमारे संतो की दृष्टि में पर्यावरण और शांति का चरित्र 'वैश्विक' था। और इसलिए उनके मुख से माता भूमि: पुत्रोहं पृथिव्या' का गान फूट पड़ा था। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य त्रुतिकी श्रेणी में आता है। रामायण, भगवद्गीता, समेत महाभारत तथा उपनिषद् जैसी रचनाएँ स्मृति परंपरा के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। इस समय सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण समस्याओं के जाल में घिरा है। वर्तमान में पर्यावरण विषय सिर्फ स्थानीय न होकर सम्पूर्ण भूमण्डल पर चर्चा का विषय बना हुआ है।

वैदिक ऋषि पर्यावरण की दृष्टि से इनका महत्व स्वीकारते हुए – **"नमो वृक्षेभ्यः"**

वैदिक ऋषि वनस्पति को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हैं। इतना ही नहीं वृक्ष वन औषधियों का संरक्षण करने वालों को वह कहकर नमन करते हैं— **"वनानां पतयें नमः?"**

तथा

"औषधीना पतये नमः"

पर्यावरण जीवन जगत का आधार अर्थात् जीवनयापन का स्रोत है जो पृथ्वी पर अनादिकाल से मानव, जीव-जन्तु और वनस्पति को आधार प्रदान कर रहा है। प्राचीन समय में पर्यावरण अध्ययन और अध्ययन का गौण पक्ष रहा है। प्रकृति से उनका सामंजस्य था तथा उस समय प्राकृतिक संसाधनों का सन्तुलित चक्र बना हुआ था परन्तु आज भौतिकतावादिता की अंधी दौड़ ने और औद्योगिककरण ने मानव को स्वार्थी बना दिया है। मानव ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अधिकाधिक संसाधनों का दोहन, नवीनत तकनीकों का उपयोग नगरीकरण आदि से पर्यावरणीय संकट की स्थिति उत्पन्न कर ली है। वेदों में वृक्ष, वनस्पति औषधि लता आदि का भी सम्मान पूर्वक उल्लेख मिलता है।

प्रकृति के साथ सद्भाव में रहना हमारे लिए नया नहीं है। प्रकृति के साथ सामंजस्य भारत की परंपरा और संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय दर्शन में है कि "सम्पूर्ण प्राकृतिक संसार सद्भाव में रहे"। जो संस्कृत के प्रसिद्ध वाक्यांश 'वसुदेव कुटुम्बकम्' में परिलक्षित होता है। जिसका अर्थ है "सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है। वाक्यांश का उल्लेख महाउपनिषद् में मिलता है। जो अथर्ववेद का कोई हिस्सा है हमारा प्राचीन साहित्य ऐसे उदाहरणों से भरा है। जहाँ मूल्य और प्रकृति के प्रति मनुष्य संवेदनशीलता की महिमा और सिद्धांत की स्थिरता अपने सबसे अच्छे रूप में स्थापित की गई थी वैदिक काल के दौरान जंगल वनस्पति के उत्पादक व साथ ही सुरक्षात्मक पहलू दोनों पर बल दिया गया। यह वह समय था जब पवित्र जंगलों व गुफाओं, पवित्र गलियारों व विभिन्न प्रकार की जातीय-वानिकी प्रथाओं जैसी सांस्कृतिक परिदृश्य की अवधारणाएँ विकसित हुईं।

वैदिक ग्रंथों में पर्यावरण के वृहद स्वरूप, उसके संरक्षण तथा चैतन्यता पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। इसमें पर्यावरण को प्रचलित संकल्पना के स्थान पर इसके सम्पूर्ण सचेतन एवं विशद स्वरूप का वर्णन है। तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों की जिम्मेदारी भी तय की गई है। पर्यावरण का संतुलन पृथ्वी के अस्तित्व व जीवन से सीधा जुड़ा हुआ है। इसलिए पृथ्वी की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए वैदिक ऋषियों ने प्राणी और पृथ्वी के सम्बन्ध को अत्यंत संवेदनशील घोषित किया और कहा कि **"माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्याम्"** अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है। और मैं उसका पुत्र हूँ।

वैदिक काल में यद्यपि सृष्टि साम्यावस्था में थी जीवन यापन की अनुकूलतम अवस्थाएँ थी, या यूँ कहो कि तत्कालीन वातावरण पूर्ण व्यवस्थित था और पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्या नहीं थी तथापि मानव स्वभाव को जानने वाले क्रान्तदर्शी ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के प्रति मानव को पहले ही सचेत कर दिया था। **"ईशावास्यं इदं सर्वं"** अर्थात् जगत के कण कण में ईश्वर है। ईश्वर ही इस सारे जग की संचालन शक्ति उर्जा का रूप है प्रकृति के कण कण में उसका वास है। अतः यहाँ इस संसार को त्यागते हुए भोगों यानि उतना ही लो जितना तुम्हारे जीने के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु समाज के लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है। वेदों से प्राचीन कोई वाङ्मय नहीं है। वेद में जिन पाँच तत्वों की शांति का वर्णन किया गया है वे पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश है। इनमें से किसी के भी कुपित होने पर भूकंप, बाढ़, जलप्लावन, दावाग्नि, एवं भयंकर तूफान की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उपासना से इन सभी तत्वों को शांत रखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति एवं चिन्तन में पर्यावरण का महत्व है। प्रकृति ने ही भारतीय संस्कृति को नया आयाम दिया है। वैदिक काल से उत्तर वैदिक कालीन समाज में प्रकृति के महत्व को देखें तो वैदिक कालीन मानव प्रकृति को जीवन दात्री समझता था। वैदिक समाज पर्वों व शुभ अवसरों पर प्रकृति का पूजन करता था। इससे प्रेम का भाव स्फुटित होता था। यह भाव ही पर्यावरण संरक्षण का उनके लिए बुनियादी आधार था। भारतीय वैदिक साहित्य में कुछ पुराण प्राकृतिक घटकों जैसे-अग्नि, वायु, वरुण, इत्यादि के नाम पर रखे गये हैं जिनका उद्देश्य इनके महत्व को रेखांकित करते हुए घटक की पवित्रता को सर्व स्थापित करना था। ताकि तत्कालीन समाज पर्यावरण संरक्षण को धर्म की आज्ञा माने साथ ही इसमें अपने योगदान को ईश्वर की सेवा के समान समझे। पर्यावरण के घटकों में समन्वय होना ही सुख, शांति व समृद्धि का आधार है। पर्यावरण को हम प्रकृति व प्रगति के मध्य अन्तः सम्बन्ध के रूप में देखते हैं। पर्यावरण को संतुलित करने में वृक्षों के अदभूत योगदान की भूमिका को स्वीकार करते हुए ऋषियों ने बहुत

अधिक चिंतन व विचार मंथन किया है। मनुष्य की प्रगति का इतिहास प्राकृतिक परिवेश उसके सामंजस्यपूर्ण व्यवहार की कहानी है। पर्यावरण संरक्षण को भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व दिया गया है। मनुष्य एवं प्रकृति के आन्वोन्याश्रित संबंध को भारतीय ऋषियों-मुनियों ने बड़ी गहराई से समझा था। वर्तमान समय में ये अत्यंत भिन्न है। उस काल में पर्यावरण पर काम करने के लिए कोई सामाजिक संस्थान या राष्ट्रीय नीति नहीं थी। भारतीय ऋषियों ने समाज को पहला संदेश यही दिया कि "इस सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक जड़ चेतन वस्तु में आत्मिक साहचर्य है"।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नैतिक मूल्यों में विघटन, बेहताशा उपभोग और व्यर्थ का उत्पादन पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण है। काफी पहले प्रदूषण की समस्या इतनी बड़ी समस्या नहीं थी। सारा का सारा वैदिक और पौराणिक साहित्य कभी नदियों, पर्वतों, झीलों, वृक्षों, जीव-जन्तुओं और मेघों आदि की पूजा करता था। नई सदी में जब विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का त्वरित परादुभाव हुआ तो वह भौतिक उन्नति के साथ साथ मानव की सोच में एक युगांतकारी परिवर्तन भी लेकर आया, सदियों तक प्रकृति का साधक रहने वाला अब उसका उपभोक्ता बन गया है। उसके लिए अब प्रकृति साध्य के बजाए एक साधन मात्र ही बन कर रह गई है। बहुत कुछ मिला परंतु उससे भी अधिक कहीं कुछ खो गया है। ओऽम द्यौः शांति अंतरिक्ष शांतिः पृथ्वी शांतिराप शांति औषधयः शांति वनस्पतयः शांति सामा शांतिरेधि का पाठ पढ़ने वाला मानव शांति की खोज में भटकने लगा है। वेद मंत्रों के अनुसार जो पर्यावरण देव अग्नि वायु जल आकाश पृथ्वी से आच्छादित है तथा जो औषधियों एवं वनस्पतियों में भी विद्यमान है। वे पर्यावरण देव अब हमें डराने लगे हैं। प्राचीन संस्कृति का मूलाधार प्रकृति के साथ तारतम्य रखना था। आज हम लोगों को आत्मावलोकन और आत्म सुधार करने अर्थात् अपनी मानसिक दुर्बलताओं को दूर करने की आवश्यकता है हमें जीव मातृ एवं प्रकृति के साथ भी मानवपूर्ण संबंध स्थापित करने होंगे। पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर हमें अधिक संवेदनशील होकर कार्य करना होगा।

संदर्भ सूची

- 1 यजुर्वेद, 16.17
- 2 तदेव 16.18
- 3 तदेव 16.19
4. अथर्ववेद 12.01.12
- 5 यजुर्वेद, 1.40

आधार ग्रंथ सूची :

1. डॉ. कपिल देव द्विवेदी, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, अष्टम संस्करण, 2021, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 1, अध्याय 1.
2. डॉ कपिल देव द्विवेदी, वेदों में विज्ञान,, द्वितीय संस्करण 2004, प्रकाशक विश्वभारती अनुसंधान परिषद, अध्याय 10, पृष्ठ संख्या 352.
3. लेखक बाल्मीकि प्रसाद सिंह, भारतीय संस्कृति: कुछ तथ्य कुछ परिप्रेक्ष्य, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, अध्याय 1, पहला संस्करण 1999.
4. लेखक बाल्मीकि प्रसाद सिंह, संस्कृति राज्य कलाएँ, और उनसे परे, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, अध्याय 1, पहला संस्करण 1999.
5. सरिता दूबे, ग्रामीण महिलाओं में पर्यावरणीय संबंधी चेतना: एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, 2001, शोध ग्रंथ बुन्देलखंड विश्वविद्यालय झॉंसी.
6. लेखक तरसेन कुमार शर्मा, नूरपुर, संस्कृति में वैदिक काल से दिया गया पर्यावरण का महत्व, जागरण समाचार पत्र, प्रकाशन 20 अक्टूबर 2021, बुधवार.
7. लेखक अविकल सोमवंशी, हिन्दू दर्शन और पर्यावरण प्रदूषण, डाउन टू अर्थ समाचार पत्र, प्रकाशित 18 जून 2013.
8. लेखक प्रतिभा खट्टुमरा, लेख यजुर्वेद आधुनिक पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय ब्यावर 2019.
9. लेख, प्राकृतिक संसाधनों का संपोषित प्रबंधन, पृष्ठ 301, 302, अध्याय 6.
10. लेखक डॉ, उमा शर्मा जैन, प्रदूषण नैतिकता, विज्ञान और धर्म, वार्षिक पत्रिका, मंथन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुडकी, अंक 15, 2017, पृष्ठ 9,10.
11. लेखक डॉ. यतींद्र कुमार कटारिया, वैदिक दृष्टिकोण में पर्यावरण संचेतना एवं संरक्षण, विधालंकार" पत्रिका मंथन, अंक 15, 2017, पृष्ठ 13,14.

•